ज्ञानोदय

सरस्वती शिशु मन्दिर

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

0120-4545608

WEBSITE: ssmnoida.in

GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा
मासिक ई-पत्रिका, अगस्त – 2025

ज्ञानोदय (अंक-58)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता
श्री प्रदीप भारद्वाज
श्री कृष्ण कुमार बंसल
श्री राजीव नाईक
श्री नितीश आर्य
श्री जितेन्द्र कुमार गौतम
श्री सुशील कुमार

मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा

संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार
बoअनु सिंह

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- अनन्त चतुर्दशी
- विश्व साक्षरता दिवस
- हिन्दी दिवस
- विष्वकर्मा पूजा
- नवरात्री
- महाराजा अग्रसेन जयंती
- पं दीनदयाल उपाध्याय जयंती
- कावड़ यात्रा
- अतिथियों का विद्यालय भ्रमण
- रक्षाबंधन
- स्वतंत्रता दिवस
- जन्माष्टमी
- मातृ प्रबोधन
- हरतालिका तीज
- गणेश चतुर्थी
- राष्ट्रीय खेल दिवस
- जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम
- बताओ तो जानें
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

संपादक

प्यारे भैया/बहिनों,

हम सबके जीवन में बहुत से दोस्त होते हैं — कोई स्कूल का, कोई पड़ोस का, कोई खेल का। लेकिन क्या तुमने कभी सोचा है कि किताबें भी हमारी सच्ची दोस्त हो सकती हैं? जी हाँ, वो दोस्त जो हमें कभी अकेला नहीं छोड़तीं, जो हर समय हमारा साथ देती हैं, और सबसे खास बात — जो हमें समझदार और अच्छा इंसान बनाती हैं।

📚 **किताबें ज्ञान का खजाना होती हैं।**

ये हमें नई बातें सिखाती हैं, चाहे वो इतिहास की हों, विज्ञान की या किसी देश की कहानी।

जब हम कहानियाँ पढ़ते हैं, तो हमारी कल्पना शक्ति (imagination) बढ़ती है।

किताबें हमें अच्छे संस्कार और सही-गलत की पहचान भी सिखाती हैं।

👧👦 आपको पता है भैया- बहिनों किताबें हमेशा हमारे साथ रहती हैं:

जब भी तुम अकेला महसूस करो, किताब खोलो — वो तुम्हें एक नई दुनिया में ले जाएगी।

कुछ न मांगें, सिर्फ दें: किताबें बदले में कुछ नहीं चाहतीं। न खाने को, न खेलने को। लेकिन वो हमें हँसी, ज्ञान और समझ देती हैं।

हर विषय की दोस्त:

चाहे तुम्हें जानवरों में दिलचस्पी हो या सितारों में, हर विषय की किताब आप सबकी दोस्त बन सकती है।

अच्छे इंसान बनाती हैं: किताबों से दोस्ती करने से आप में संवेदनशीलता, धैर्य और समझदारी आती है।

🧠 ज्ञान + मनोरंजन = किताबें

कुछ किताबें हमें हँसाती हैं, कुछ रुलाती हैं, कुछ सोचने पर मजबूर कर देती हैं। लेकिन हर किताब हमें कुछ न कुछ सीखाकर ही छोड़ती है। इसलिए कहावत है —

"Books are our best friends."

🌈 मेरा सुझाव है कि भैया- बहिन हर दिन कम से कम 20 मिनट किताबें पढ़ने की आदत डालो। तुम देखोगे कि तुममें बोलने का तरीका, सोचने का नजरिया, और अभिव्यक्ति की कला बेहतर हो जाएगी।

✨ अंत में...

भैया-बहिनों, मोबाइल और टीवी की दुनिया रंगीन जरूर है, लेकिन किताबों की दुनिया सुंदर और सच्ची है। जब भी समय मिले, किताबों से दोस्ती करो।

पढ़ते रहो बढ़ते रहो

अनु सिंह

अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)

प्रधानाचार्य जी की कलम से

आज के समय में बच्चों के जीवन में नैतिक मूल्यों की कमी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। आधुनिक युग की तेज़ रफ़्तार, बदलती जीवनशैली और तकनीकी विकास ने जहाँ सुविधाएँ बढ़ाई हैं, वहीं बच्चों में नैतिक मूल्यों की जड़ें कमजोर कर दी हैं। नैतिकता का अर्थ है – अच्छा-बुरा समझना, सत्य और असत्य में अंतर करना तथा सदाचारपूर्ण जीवन जीना। किंतु आज की पीढ़ी इन मूल्यों से धीरे-धीरे दूर होती जा रही है।

बच्चों में नैतिकता के अभाव का सबसे बड़ा कारण है परिवार और समाज का वातावरण। पहले संयुक्त परिवारों में बच्चों को बड़ों से संस्कार और अनुशासन मिलता था। अब अधिकांश परिवार एकल हो गए हैं, जहाँ माता-पिता व्यस्त रहते हैं और बच्चों के पास मार्गदर्शन का अभाव रहता है। इस कारण बच्चे टीवी, मोबाइल और इंटरनेट की आभासी दुनिया में ज्यादा समय बिताते हैं, जिससे उनके व्यवहार और सोच पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा प्रणाली भी नैतिकता की गिरावट के लिए जिम्मेदार है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल अंकों और प्रतियोगिता तक सीमित हो गया है। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना विज्ञान और तकनीकी विषयों को। परिणामस्वरूप, बच्चों में अनुशासन, ईमानदारी, दया, करुणा और सम्मान जैसे गुण धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं।

इसके अलावा, समाज और मीडिया का प्रभाव भी बच्चों की सोच पर गहरा असर डालता है। फ़िल्में, विज्ञापन और सोशल मीडिया पर दिखाया जाने वाला भौतिकवादी जीवन बच्चों को आकर्षित करता है। वे मान-सम्मान और नैतिक मूल्यों से अधिक पैसा और ऐशो-आराम को जीवन का लक्ष्य मानने लगते हैं।

नैतिकता का अभाव भविष्य के लिए गंभीर चिंता का विषय है। यदि बच्चों में सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, दया और ईमानदारी जैसी मूलभूत मान्यताएँ नहीं होंगी तो वे अच्छे नागरिक नहीं बन पाएंगे। समाज में स्वार्थ, हिंसा और अव्यवस्था बढ़ेगी।

इस स्थिति को सुधारने के लिए परिवार, विद्यालय और समाज को मिलकर प्रयास करना होगा। माता-पिता को बच्चों के साथ समय बिताना चाहिए और अपने व्यवहार से अच्छे संस्कार देने चाहिए। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा और मूल्य आधारित कहानियों को पढ़ाना चाहिए। समाज को भी ऐसा वातावरण बनाना होगा, जहाँ अच्छे कार्यों को बढ़ावा मिले और बच्चों को प्रेरणा मिल सके।

अंततः कहा जा सकता है कि आज के बच्चों में नैतिकता का अभाव एक गंभीर चुनौती है, लेकिन यदि सही मार्गदर्शन और सकारात्मक वातावरण मिले तो बच्चे पुनः अच्छे संस्कार और नैतिक मूल्यों को आत्मसात कर सकते हैं। यही भविष्य के उज्ज्वल समाज की नींव होगी।

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मन्दिर, नोएडा

अनन्त चतुर्दशी

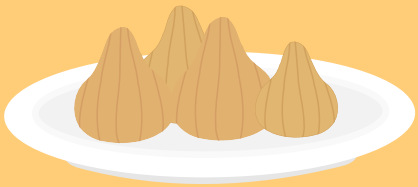

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

अनंत चतुर्दशी का त्योहार भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है। इस अवसर को अनंत चौदस के नाम से भी जाना जाता है। यह पवित्र दिन भगवान विष्णु को समर्पित है,जिन्हें कई अवतारों के भगवान और ब्रह्मांड के संरक्षक के रूप में जाना जाता है। भगवान अनंत भी भगवान विष्णु के अवतारों में से एक है। इस दिन अनंत भगवान की पूजा करके संकटों से रक्षा करने वाला अनंत सूत्र बांधा जाता है। यह दिन गणेश विसर्जन की रस्म के लिए भी प्रसिद्ध है।कहा जाता है कि जब पांडव द्यूत क्रीडा में अपना सारा राज-पाट हारकर वन में कष्ट भोग रहे थे, तब भगवान श्री कृष्ण ने उन्हें अनंत चतुर्दशी का व्रत करने की सलाह दी थी। धर्मराज युधिष्ठिर ने अपने भाइयों तथा द्रोपदी के साथ पूरे विधि-विधान से यह व्रत किया तथा अनंत सूत्र धारण किया। अनंत चतुर्दशी व्रत के प्रभाव से पांडव सब संकटों से मुक्त हो गए। इस दिन व्रतकर्ता प्रातः स्नान करके व्रत का संकल्प करते हैं। घर में पूजागृह की स्वच्छ भूमि पर कलश स्थापित करते हैं और कलश पर शेषनाग की शैय्या पर लेटे भगवान विष्णु की मूर्ति या चित्र को रखकर उनके समक्ष चौदह ग्रंथियों (गांठों) से युक्त अनंत सूत्र रखते हैं इसके बाद “ऊँ अनंताय नमः” मंत्र से भगवान विष्णु तथा अनंत सूत्र की षोडशोपचार विधि से पूजा करते हैं। पूजनोपरांत अनंत सूत्र को मंत्र पढ़कर पुरुष अपने दाहिने हाथ और स्त्री बाएं हाथ में बांध लेती हैं।

अनंत संसार महासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव।
अनंतरुपे विनियोजयस्व ह्यानंतसूत्राय नमो नमस्ते ।।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार सतयुग में सुमंतु नाम के एक मुनि थे। उनकी पुत्री शीला अपने नाम के अनुरूप अत्यंत सुशील थी। सुमंतु मुनि ने उस कन्या का विवाह कौण्डिन्य मुनि से किया। कौण्डिन्य मुनि अपनी पत्नी शीला को लेकर जब ससुराल से घर वापस लौट रहे थे तब रास्ते में नदी के किनारे कुछ स्त्रियां अनंत भगवान की पूजा करते दिखाई दी, शीला ने अनंत व्रत का माहात्म्य जानकर उन स्त्रियों के साथ अनंत भगवान का पूजन करके अनंत सूत्र बांध लिया। इसके फल स्वरुप थोड़े ही दिनों में उसका घर धन-धान्य से पूर्ण हो गया। लेकिन उनके पति ने इस अनंत सूत्र को आग में डालकर जला दिया इस जघन्य कर्म का परिणाम भी शीघ्र ही सामने आ गया। उनकी सारी संपत्ति नष्ट हो गई। दीन-हीन स्थिति में जीवन यापन करने में विवश हो जाने पर कौण्डिन्य ऋषि ने अपने अपराध का प्रायश्चित करने का निर्णय लिया। वे अनंत भगवान से क्षमा मांगने हेतु वन में चले गए उन्हें रास्ते में जो मिलता वह उससे अनंत देव का पता पूछते जाते थे। बहुत खोजने पर भी जब अनंत भगवान का साक्षात्कार नहीं हुआ तब वह निराश होकर प्राण त्यागने को उद्यत हुए तभी एक वृद्ध ब्राह्मण ने आकर उन्हें ऐसा करने से रोक दिया और एक गुफा में ले जाकर चतुर्भुज अनंत देव का दर्शन कराया। भगवान ने मुनि से कहा तुमने जो अनंत सूत्र का तिरस्कार किया है यह सब उसी का फल है इसके प्रायश्चित हेतु तुम चौदह वर्ष तक निरंतर अनंत व्रत का पालन करो। कौण्डिन्य मुनि ने इस आज्ञा को सहर्ष स्वीकार कर लिया और नियम पूर्वक पालन करके खोई हुई समृद्धि को पुनः प्राप्त कर लिया।

रजनी शर्मा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व साक्षरता दिवस

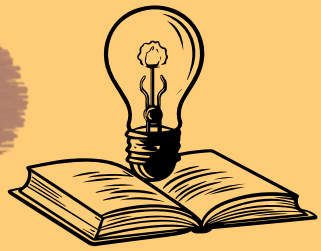

साक्षरता किसी भी देश की प्रगति का मूल आधार है। यह केवल पढ़ना-लिखना सीखने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने और उसे अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाने का माध्यम भी है। इसी के संदर्भ में कुछ पंक्तियां :-

तरक्की में ना बाधा हो, जब पढ़ने का दृढ़ इरादा हो
प्रगति से नहीं होगी दूरी, जब सब की साक्षरता होगी पूरी।

साक्षर व्यक्ति समाज और राष्ट्र की उन्नति में सक्रिय भागीदार बन सकता है। इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ष 8 सितम्बर को विश्व साक्षरता दिवस मनाया जाता है।

विश्व साक्षरता दिवस का इतिहास

यूनेस्को (UNESCO) ने 17 नवम्बर 1965 को यह घोषणा की थी कि 8 सितम्बर को विश्व साक्षरता दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इसका उद्देश्य दुनिया के सभी देशों को साक्षरता के महत्व से अवगत कराना और निरक्षरता को दूर करने के लिए वैश्विक प्रयासों को एकजुट करना था। 1966 से यह दिवस निरंतर मनाया जा रहा है।

साक्षरता का महत्व

साक्षरता व्यक्ति को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाता है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकता है। शिक्षा और साक्षरता समाज से गरीबी, अज्ञानता और अंधविश्वास को दूर करने में सहायक होती है। यह राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति की आधारशिला है।

भारत में साक्षरता की स्थिति

भारत जैसे विशाल देश में निरक्षरता एक बड़ी चुनौती रही है। सरकार ने साक्षरता बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाएँ चलाई हैं, जैसे राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, सर्व शिक्षा अभियान आदि। भारत का आधार गांव को माना जाता है क्योंकि भारत की 65% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करती है जब तक ग्रामीण क्षेत्र के लोगो की सोच में बदलाव किया जाएगा तभी संपूर्ण देश प्रगति की ओर अग्रसर होगा। आज स्थिति में सुधार हुआ है, परंतु ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में अभी भी शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

विश्व साक्षरता दिवस हमें यह संदेश देता है कि शिक्षा हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। यदि प्रत्येक नागरिक को साक्षर बनाया जाए तो समाज में समानता, भाईचारा और प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम निरक्षरता को जड़ से मिटाने में सहयोग देंगे और एक साक्षर, जागरूक तथा सशक्त समाज के निर्माण में योगदान देंगे।

"अज्ञानता का अंधेरा मिटाएँ, शिक्षा का दीप जलाएँ।"

राजेन्द्र प्रसाद (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

हिंदी दिवस

भाषा किसी भी समाज और राष्ट्र की आत्मा होती है। यह न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि संस्कृति, परंपरा और पहचान की ध्वजवाहक भी है। हर वर्ष 14 सितम्बर को 'हिन्दी दिवस' मनाया जाता है, ताकि हमें हमारी राजभाषा के महत्व की याद दिलाई जा सके और इसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रयास किए जा सकें।14 सितम्बर 1949 को भारतीय संविधान सभा ने हिन्दी को देवनागरी लिपि में भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। यह दिन हिन्दी की ऐतिहासिक मान्यता का प्रतीक है। संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान किया गया कि संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। बाद में 1953 से यह तय किया गया कि प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाए।

हिन्दी का महत्व

आज हिन्दी केवल भारत की भाषा भर नहीं है, बल्कि विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। लगभग 65 करोड़ लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, फिजी, मॉरीशस, त्रिनिदाद, नेपाल, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका सहित अनेक देशों में हिन्दी बोली, समझी और पढ़ाई जाती है। संयुक्त राष्ट्र (UNO) में भी हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिलाने के प्रयास निरंतर जारी हैं। ऐसे में हिंदी ही वह भाषा है जो अधिकतर भारतीयों के बीच संपर्क भाषा (Lingua Franca) का कार्य करती है। रेलवे स्टेशनों, सरकारी कार्यों, सिनेमा, समाचार, शिक्षा, साहित्य और डिजिटल मंचों पर हिंदी निरंतर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है।

हिन्दी दिवस मनाने का उद्देश्य

हिन्दी दिवस केवल एक औपचारिक दिन नहीं है, बल्कि यह हमें यह याद दिलाता है कि –

1. हमें अपनी मातृभाषा और राजभाषा पर गर्व करना चाहिए।
2. हमें हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए।
3. हमें शिक्षा, प्रशासन और विज्ञान-तकनीक में हिन्दी को और सशक्त बनाना चाहिए।
4. हमें युवाओं में हिन्दी के प्रति आकर्षण पैदा करना चाहिए।

हिन्दी की चुनौतियाँ

1. अंग्रेज़ी का वर्चस्व – रोजगार, उच्च शिक्षा और तकनीक में अंग्रेज़ी की प्रधानता।
2. प्रांतीय भाषाओं के साथ संतुलन – भारत की विविधता के बीच हिन्दी को बढ़ावा देना चुनौतीपूर्ण है।
3. तकनीकी शब्दावली की कमी – विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उपयुक्त हिन्दी शब्दों का अभाव।
4. युवाओं की उदासीनता – युवा पीढ़ी हिन्दी बोलते समय अंग्रेज़ी मिश्रित भाषा को अधिक महत्व देती है।

हिन्दी का भविष्य

यदि हम संकल्प लें तो हिन्दी आने वाले समय में विश्व की प्रमुख भाषा बन सकती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, ब्लॉगिंग और यूट्यूब ने हिन्दी के लिए नए अवसर खोले हैं। आज हिन्दी कंटेंट की मांग इंटरनेट पर सबसे तेज़ी से बढ़ रही है। गूगल और यूट्यूब की रिपोर्ट बताती है कि भारत में हिन्दी भाषा में खोज और सामग्री उपभोग अंग्रेज़ी से कहीं अधिक है।

हिन्दी के प्रति हमारा कर्तव्य

- हमें अपने दैनिक जीवन में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना चाहिए।
- हमें बच्चों को हिन्दी में सोचने और अभिव्यक्त होने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- कार्यालयों, संस्थानों और शिक्षण केंद्रों में हिन्दी को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- हमें हिन्दी साहित्य पढ़ने और लिखने की आदत डालनी चाहिए।

उपसंहार

हिन्दी केवल भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, सभ्यता और राष्ट्रीय एकता की पहचान है। यदि हमें भारत की आत्मा को जीवित रखना है, तो हिन्दी को सम्मान और स्थान देना ही होगा।

धर्मेन्द्र कुमार (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्वकर्मा पूजा

विश्वकर्मा पूजा हर साल 17 सितंबर को मनाई जाती है। और यह देवताओं के वास्तुकार भगवान विश्वकर्मा जी की जयंती होती है।इस दिन इंजीनियरों, कारीगरों और औद्योगिक क्षेत्र के लोग अपनी मशीनों, औजारों और कार्य स्थलों की पूजा करते हैं ताकि व्यापार और निर्माण कार्य में तरक्की मिले।मानव सामाजिक प्राणी है। जब हम अपनी धार्मिक मर्यादा पूर्वक कायम रखेंगे। मानव समाज में देव और दानव दोनों में संबंध रहा है। और रहेगा क्योंकि सृष्टि के आरंभ से देवता और दैत्य चले आ रहे हैं। साथ ही इस संसार के समस्त प्राणी यथा समय उन दोनों के शासन में रहते आए हैं।सुताराम उनकी पूजा अर्चना भी होती आई है।

उन्हें पूज्य देवताओं में ब्रह्मा के प्रपुत्र श्री विश्वकर्मा जी भी है जिनकी पूजा का विधान वैदिक काल से भी था और यज्ञ तथा वस्तु विधान के प्रसंग में उनकी अर्चना सर्वदा से होती रही है। जो कालांतर में बंद सी हो गई थी। क्योंकि अभी भी ब्रह्मा जी की पूजा एवं मंदिर बिरले ही देखने को मिलता है। यह कौन नहीं जानता कि विश्वकर्मा ने ही सर्वप्रथम स्वर्ग लोक की रचना की बाद में लंका, द्वारिका आदि अनेक पुरियो का निर्माण देवलोक के शिल्पी बाबा विश्वकर्मा ने ही किया। पुरूरवा के राज्य में जब द्वादश वर्षीय यज्ञ हुआ था। तब वहां यज्ञशाला का निर्माण विश्वकर्मा ने किया था।

विश्वकर्मा पूजा में क्या किया जाता है?

- सफाई- सुबह उठकर कार्यालय, फैक्ट्री या दुकान की सफाई करें और सभी औजारों को और मशीनों को भी साफ करें।
- पवित्र करना-पूजा स्थल पर गंगाजल छिड़ककर उस स्थान को पवित्र करें।
- मूर्ति स्थापना- एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर भगवान विश्वकर्मा की प्रतिमा या फोटो स्थापित करें।
- सामग्री अर्पित करना- भगवान विश्वकर्मा और मशीनों औजारों पर फूल अक्षत (चावल) और रक्षा सूत्र अर्पित करें।
- भोग लगाना और आरती करना - फल मिठाई का भोग लगाएं और भगवान विश्वकर्मा की आरती उतारे साथ ही औजारों की भी आरती करें।
- प्रसाद बांटना- सभी लोगों में प्रसाद बांटे और खुद भी सेवन करें।

यह त्यौहार मुख्य तौर पर विश्वकर्मा के पांच पुत्रों मनु, मय त्वष्टा शिल्पी और देवज्ञ की संतानों द्वारा मनाई जाती है। जो कि अपने देव शिल्पी को विद्या से संसार के कार्यों में अपना सहयोग देते आए हैं। धन्यवाद

राखी जी (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

शुभ नवरात्रि

नवरात्र अथवा नवरात्रि हिन्दुओं का एक प्रमुख पर्व है | नवरात्र एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है नव रातों का समय | हर साल आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से लेकर नवमी तिथि तक शारदीय नवरात्र मनाया जाता है | नवरात्रि के दौरान पूजी जाने वाली देवी दुर्गा के नौ रूप हैं : शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री | इन्हें नवदुर्गा कहा जाता है | ये रूप शक्ति, साहस और जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतीक है |

नवदुर्गा का महत्व

- नवदुर्गा की पूजा शक्ति और साहस की देवी के रूप में की जाती है |
- इनकी पूजा से भक्तों को शारीरिक और मानसिक कल्याण प्राप्त होता है |
- ये जीवन के विभिन्न चरणों और उद्देश्यों को दर्शाती हैं |
- नवरात्रि के दौरान इन नौ देवियों के बीज मंत्रों का जाप करना बहुत कल्याणकारी माना जाता है |

यह पर्व जगत जननी आदिशक्ति देवी माँ दुर्गा को समर्पित होता है | इस दौरान जगत की देवी माँ और उनके नौ रूपों की पूजा की जाती है | साथ ही उनके निमित्त शारदीय नवरात्र का व्रत रखा जाता है | इस व्रत को करने से साधक की हर मनोकामना पूर्ण होती है, साथ ही सुख और सौभाग्य में वृद्धि होती है | नवरात्र भारत की विभिन्न भागों में अलग ढंग से मनाया जाता है | गुजरात में इस त्यौहार को बड़े पैमाने पर मनाया जाता है | गुजरात में यह समारोह डांडिया एवं गरबा खेल कर मनाया जाता है | यह पुरे रातभर चलता है देवी की सम्मान में भक्ति प्रदर्शन की रूप में गरबा आरती से पहले किया जाता है और डांडिया समारोह की बाद |

पश्चिम बंगाल के राज्य में बंगालियों के मुख्य त्यौहार में दुर्गा पूजा बंगाली कैलेंडर में सबसे अलंकृत रूप से उभरा है | शारदीय नवरात्र के अंतिम दिन महानवमी की रूप में मनाया जाता है | इसके अगले दिन विजयादशमी पर्व होता है | विजयादशमी की दिन माता दुर्गा ने महिसासुर का मर्दन किया था और प्रभु श्री राम ने रावण का वध किया था | इसलिए शारदीय नवरात्रि विशुद्ध रूप से शक्ति की आराधना के दिन माने गये है |

अरुणिमा जी (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

महाराजा अग्रसेन जयंती

भारत की धरती महान संतों, महापुरुषों और समाज सुधारकों की जन्मभूमि रही है। ऐसे ही एक आदर्श राजा और समाज सुधारक थे महाराजा अग्रसेन, जिनकी जयंती पूरे देश में श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई जाती है। उनका जीवन आज भी हमें समानता, उदारता और समाज सेवा की शिक्षा देता है। महाराजा अग्रसेन का जन्म द्वापर युग के अंतिम चरण में हुआ माना जाता है। वे महाराजा वल्लभ के पुत्र थे और अग्रोहा नगरी के संस्थापक माने जाते हैं। उन्हें "अग्रवाल समाज" का आदि पुरुष भी कहा जाता है। महाराजा अग्रसेन ने अपना पूरा जीवन समाज की भलाई और समानता की स्थापना में समर्पित कर दिया।

उनकी विशेषता यह थी कि वे धन और वैभव के बावजूद हमेशा जनता की सेवा को प्राथमिकता देते थे। उन्होंने युद्ध के बजाय शांति और सहयोग को अपनाया। यही कारण है कि उनके शासनकाल में प्रजा सुखी और समृद्ध थी। महाराजा अग्रसेन ने समाज में सहयोग और परस्पर सहायता की अनूठी परंपरा स्थापित की। उनके नियम के अनुसार जब भी कोई नया परिवार अग्रोहा नगरी में बसता, तो हर परिवार उस नए परिवार को एक रुपया और एक ईंट देता। इस परंपरा से नए परिवार को आर्थिक सहारा मिलता और घर बनाने के लिए सामग्री भी। इससे न केवल भाईचारे की भावना प्रबल हुई बल्कि समाज में आत्मनिर्भरता और सामूहिक सहयोग की परंपरा भी शुरू हुई। उन्होंने अहिंसा और समाजवाद के सिद्धांतों को जीवन में अपनाया। वे चाहते थे कि समाज का हर व्यक्ति बिना भेदभाव के सुखी जीवन जी सके। इसी वजह से उन्होंने जाति, धर्म और ऊँच-नीच के भेदभाव को समाप्त कर समानता का मार्ग प्रशस्त किया।

महाराजा अग्रसेन ने व्यापार और उद्योग को भी बढ़ावा दिया। उनके समय में अग्रोहा नगर व्यापार का प्रमुख केंद्र बन गया था। आज भी अग्रवाल समाज व्यापार और उद्योग जगत में अग्रणी है, जो उनकी दूरदर्शिता और आदर्शों का प्रत्यक्ष प्रमाण है। महाराजा अग्रसेन जयंती का आयोजन हर वर्ष आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा को धूमधाम से किया जाता है। इस दिन अग्रवाल समाज तथा अन्य लोग उनके सिद्धांतों को याद करते हैं और समाज में सहयोग, सेवा और भाईचारे की भावना को आगे बढ़ाने का संकल्प लेते हैं।

निष्कर्ष

महाराजा अग्रसेन केवल एक महान शासक ही नहीं बल्कि एक समाज सुधारक और दूरदर्शी नेता भी थे। उन्होंने हमें यह सिखाया कि सहयोग और समानता ही सच्चे समाज की नींव है। आज की दुनिया में, जहाँ स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा का बोलबाला है, महाराजा अग्रसेन के आदर्श हमें एक नई राह दिखाते हैं। इसलिए उनकी जयंती हमें प्रेरणा देती है कि हम समाज में भाईचारा, उदारता और सहयोग की भावना को आगे बढ़ाएँ।

दीपक जी (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

पं दीनदयाल उपाध्याय जयंती

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 को धनकिया नामक स्थान ,जयपुर अजमेर रेलवे लाइन के पास [राजस्थान] हुआ था। उनके पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय था, नागला चंद्रभान दीनदयाल जी का पैतृक गांव था, और नगला चंद्रभान (फरह, मथुरा) के निवासी थे। उनकी माता का नाम रामप्यारी था, जो धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। पिता रेलवे में जलेसर रोड स्टेशन के सहायक स्टेशन मास्टर थे। रेल की नौकरी होने के कारण उनके पिता का अधिक समय बाहर ही बीतता था। कभी-कभी छुट्टी मिलने पर ही घर आते थे। दीनदयाल अभी 3 वर्ष के भी नहीं हुये थे, कि उनके पिता का देहान्त हो गया। पति की मृत्यु से माँ रामप्यारी को अपना जीवन अंधकारमय लगने लगा। वे अत्यधिक बीमार रहने लगीं। उन्हें क्षय रोग लग गया। 8 अगस्त 1924 को उनका भी देहावसान हो गया। उस समय दीनदयाल 7 वर्ष के थे। 1926 में नाना चुन्नीलाल भी नहीं रहे। 1931 में पालन करने वाली मामी का निधन हो गया। 18 नवम्बर 1934 को अनुज शिवदयाल ने भी उपाध्याय जी का साथ सदा के लिए छोड़कर दुनिया से विदा ले ली। 1935 में स्नेहमयी नानी भी स्वर्ग सिधार गयीं। 19 वर्ष की अवस्था तक उपाध्याय जी ने मृत्यु-दर्शन से गहन साक्षात्कार कर लिया था।

8वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उपाध्याय जी ने कल्याण हाईस्कूल, सीकर, राजस्थान से दसवीं की परीक्षा में बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1937 में पिलानी से इंटरमीडिएट की परीक्षा में पुनः बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1939 में कानपुर के सनातन धर्म कालेज से बी०ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। एम०ए० करने के लिए सेंट जॉन्स कालेज, आगरा में प्रवेश लिया और पूर्वार्द्ध में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुये। बीमार बहन रामादेवी की शुश्रूषा में लगे रहने के कारण उत्तरार्द्ध न कर सके। बहन की मृत्यु ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। मामाजी के बहुत आग्रह पर उन्होंने प्रशासनिक परीक्षा दी, उत्तीर्ण भी हुये किन्तु अंगरेज सरकार की नौकरी नहीं की। 1941 में प्रयाग से बी०टी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। बी०ए० और बी०टी० करने के बाद भी उन्होंने नौकरी नहीं की। 1937 में जब वह कानपुर से बी०ए० कर थे, अपने सहपाठी बालूजी महाशब्दे की प्रेरणा से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आये। संघ के संस्थापक डॉ० हेडगेवार का सान्निध्य कानपुर में ही मिला। उपाध्याय जी ने पढ़ाई पूरी होने के बाद संघ का दो वर्षों का प्रशिक्षण पूर्ण किया और संघ के जीवनव्रती प्रचारक हो गये। आजीवन संघ के प्रचारक रहे।

संघ के माध्यम से ही उपाध्याय जी राजनीति में आये। 21 अक्टूबर 1951 को डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में 'भारतीय जनसंघ' की स्थापना हुई। गुरुजी (गोलवलकर जी) की प्रेरणा इसमें निहित थी। 1952 में इसका प्रथम अधिवेशन कानपुर में हुआ। उपाध्याय जी इस दल के महामंत्री बने। इस अधिवेशन में पारित 15 प्रस्तावों में से 7 उपाध्याय जी ने प्रस्तुत किये। डॉ० मुखर्जी ने उनकी कार्यकुशलता और क्षमता से प्रभावित होकर कहा- "यदि मुझे दो दीनदयाल मिल जाएं, तो मैं भारतीय राजनीति का नक्शा बदल दूँ।" 1967 तक उपाध्याय जी भारतीय जनसंघ के महामंत्री रहे। 1967 में कालीकट अधिवेशन में उपाध्याय जी भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। वह मात्र 43 दिन जनसंघ के अध्यक्ष रहे। 10/11 फरवरी 1968 की रात्रि में मुगलसराय स्टेशन पर उनकी हत्या कर दी गई। 11 फरवरी को प्रातः पौने चार बजे सहायक स्टेशन मास्टर को खंभा नं० 1276 के पास कंकड़ पर पड़ी हुई लाश की सूचना मिली। शव प्लेटफार्म पर रखा गया तो लोगों की भीड़ में से चिल्लाया- "अरे, यह तो जनसंघ के अध्यक्ष दीन दयाल उपाध्याय हैं।" पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गयी?

चेतना जी (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

कावड़ यात्रा

दिनांक- 1/08/2025 दिन शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के शिशु वाटिका में कक्षा अरुण (Nursery),उदय(LKG) व प्रभात(UKG) के भैया/बहिनों द्वारा कावड़ यात्रा निकाली गई। जिसमें घोष व भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों के साथ एक झांकी सजाई गई। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने झंडी दिखाकर तथा आचार्यों द्वारा पुष्पों की वर्षा करके कावड़ यात्रा का शुभारंभ किया। भैया/बहिनों ने कंधों पर लकड़ी या बाँस की डंडी से बनी कावड़ ली जिसके दोनों ओर जल के पात्र लटकाए हुए थे तथा नन्हे-नन्हे भैया/बहिनों ने बड़े ही श्रद्धा भाव से भगवान शिव का जलाभिषेक किया। विद्यालय द्वारा कावड़ यात्रा निकालने का उद्देश्य भैया/बहिनों को समाज से जोड़ना, उन्हें भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराना व उनमें भक्ति भाव और धार्मिक अनुशासन को बचपन से ही आत्मसात करने का प्रयास किया गया। इसी के साथ अभिभावकों ने भी हर्षोल्लास से कावड़ यात्रा के दौरान जगह-जगह पर भैया/ बहिनों के ऊपर पुष्पों की वर्षा की। सभी भैया/बहिनों ने बड़े ही उत्साह पूर्वक कावड़ यात्रा का आनंद लिया।

अतिथियों का विद्यालय आगमन

दिनांक -04/08/2025 को सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा के वंदना सत्र में English communication में प्रशिक्षण प्राप्त आचार्यों का विद्यालय भ्रमण हेतु आगमन।

दिनांक- 07-08-2025 को विद्यालय में रिवर इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के अध्यक्ष श्रीमान डॉक्टर ए० के० अग्रवाल जी का विद्यालय आगमन हुआ ।उन्होंने भैया/ बहिनों से बातें की और उन्हें उपहार भी दिया।

रक्षाबन्धन

सरस्वती शिशु मन्दिर नोएडा
स्वयमेव मृगेन्द्रता

सम्बद्ध : सेवा भारती नोए

सरस्वती शिशु मन्दिर सै0
द्वारा संचालित
ध्रुव संस्कार केन्द्र सै0 10
सम्बद्ध : सेवा भारती नोएडा

L.K.G

आधार कार्ड निकलवायें
बैंक ऑफ बड़ौदा

दिनांक- 8.8.2025 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में रक्षाबंधन का कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर सभी बहिनों ने भाईयों की कलाई पर राखी बांधी व तिलक लगाकर उन्हें मिठाई खिलाई। प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी व विद्यालय के भैया/बहिनों ने मिलकर अपनी प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए वृक्ष पर रक्षा सूत्र बांधकर पर्यावरण संरक्षण का प्रण लिया। साथ ही विद्यालय की बहिनों ने SP ऑफिस, हरि दर्शन पुलिस स्टेशन, जन सेवा केंद्र, गायत्री चेतना केंद्र, SBI और HDFC Bank, प्रेरणा भवन, भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर, पावर स्टेशन, विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा संचालित स०शि०मं० नोएडा के अन्तर्गत चलने वाले- सरस्वती संस्कार केंद्र, केशव संस्कार केंद्र तथा विद्या भारती उच्च शिक्षा के कार्यालय में उपस्थित अधिकारी महोदय को रक्षा सूत्र बांधकर उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना की। बहिनों को इस अवसर पर भेंट स्वरूप उपहार भी प्राप्त हुए। इस कार्यक्रम में विद्यालय की ओर से आचार्य बंधु/भगिनी भी उपस्थित रहे। बहिनों ने रेनू शर्मा जी, प्रदीप भारद्वाज जी, प्रकाश जी, असित जी, के.के बंसल जी व विकास जी को भी रक्षा सूत्र बांधा। साथ ही विद्यालय में आज विश्व संस्कृत दिवस भी मनाया गया। इस अवसर पर भैया/बहिनों ने वंदना सत्र में संस्कृत के श्लोक सुनाएं। भैया/बहिनों ने संस्कृत भाषा के महत्व को पहचानने और इसके संरक्षण को बढ़ावा देने का प्रयास भी किया।

स्वतंत्रता दिवस

दिनांक- 15/08/2025 दिन-शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में हर्षोल्लास के साथ 79 वा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में आए मुख्य अतिथि डॉ डी.के. गुप्ता (चेयरमैन एवं डायरेक्टर फेलिक्स हॉस्पिटल), गरिमामय उपस्थित मा. प्रकाश चंद्र जी (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान), विद्यालय की प्रबंध समिति श्री प्रताप मेहता जी, श्री प्रदीप भारद्वाज जी, श्री जितेंद्र गौतम जी, श्री प्रकाश वीर जी, श्री मदन पाल जी, विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी, भैया/बहिन तथा समस्त स्टाफ ने साथ मिलकर ध्वजारोहण कर राष्ट्रीय गान गाया। इस अवसर पर भैया/ बहिनों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। मुख्य अतिथि डॉक्टर डी.के. गुप्ता जी ने भैया/बहिनों का उत्साह वर्धन करते हुए उनसे बातचीत की तथा उन्हें अपना स्वास्थ्य किस प्रकार ठीक रखना है और एक नागरिक के रूप में देश के लिए हमारे क्या कर्तव्य हैं उस विषय में बताया। यह दिवस हर भारतीय के हृदय में राष्ट्रप्रेम, आत्मगौरव एवं एकता का ज्वलंत प्रतीक है। इस ऐतिहासिक दिन की गौरवगाथा को स्मरण करते हुए हम सभी ने मिलकर इस पर्व को उत्साह, देश प्रेम और गर्व के साथ मनाया। अंत में विद्यालय के अध्यक्ष महोदय श्री प्रदीप भारद्वाज जी ने आए सभी अतिथियों व अभिभावक बंधु/भगिनी को विद्यालय की गतिविधियों से अवगत कराते हुए आभार व्यक्त किया।

जन्माष्टमी

दिनांक- 14.8.2025 दिन बृहस्पतिवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में जन्माष्टमी रूप सज्जा, झांकी एवं दही हांडी का कार्यक्रम मनाया गया। जिसमें विद्यालय में आए अतिथिगण श्री प्रताप मेहता जी (संरक्षक), रेनू जी , मयंक जी व विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। श्री कृष्ण जी के बाल रूप में सजे नन्हे-नन्हे भैया/ बहिनों द्वारा यमुना पार करते वासुदेव, गोवर्धन पर्वत व राधा-कृष्ण की बाल लीलाओं से सज्जित झांकी प्रस्तुत की गई। कृष्ण, राधा, गोपी, ग्वालों के वेष में सजे भैया/ बहिनों ने नंद के आनंद भयो जय कन्हैया लाल की के जयकारे लगाए तथा भगवान कृष्ण के भजन पर नृत्य किया। उसके पश्चात भैया/बहिनों ने पिरामिड बनाकर, ऊपर बंधे दही, माखन, मिश्री, मखाने से भरी मटकी को तोड़ा व दही हांडी का कार्यक्रम बहुत ही उत्साह पूर्वक मनाया। अंत में श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी(प्रधानाचार्य) व आए अतिथियों ने भगवान कृष्ण व राधा जी की आरती की तथा सभी भैया/बहिनों में प्रसाद का वितरण किया गया।

मातृ प्रबोधन

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में दिनांक- 24 अगस्त 2025 को मातृ प्रबोधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन कर हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान देवेन्द्र कुमार शर्मा जी ने कार्यक्रम में आए अतिथियों का परिचय कराते हुए मातृ प्रबोधन कार्यक्रम के उद्देश्यों के विषय में बताया। कार्यक्रम में भैया/बहिनों ने बहुत ही मनमोहक संस्कृतिक प्रस्तुति प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में विद्या भारती के प्रांत संगठन मंत्री-मेरठ प्रांत श्रीमान प्रदीप गुप्ता जी ने उपस्थित मातृ शक्ति को संबोधित करते हुए बताया कि माता ही बालक की प्रथम गुरु होती है जो शिशुओं के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करते हुए बालक को भारतीय संस्कृति और संस्कारों से अवगत करती हैं। उन्होंने शिशुओं के विकास में संतुलित आहार की उपयोगिता के विषय में भी बताया। साथ ही यह भी बताया कि हमें हमेशा परिवार का माहौल सकारात्मक रखना चाहिए। जो शिशु देखते हैं, उसी का अनुकरण कर सीखते हैं। अगर परिवार के सदस्य एक दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे, नियमित तुलसी को जल देंगे, भगवान की पूजा करेंगे तो बालक का मार्गदर्शन भी इस प्रकार का होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षा बहिन डॉक्टर पायल गुप्ता जी ने मातृशक्ति को वर्तमान संदर्भ में मोबाइल के दुष्परिणामों से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की आचार्या श्रीमती मोनिका चौहान जी ने किया । कार्यक्रम में शिवकुमार जी (क्षेत्रीय शिशु वाटिका प्रमुख विद्या भारती) भी उपस्थित रहे और उन्होंने भी बताया कि मातृशक्ति बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए महत्वपूर्ण है, जो उसे गर्भावस्था से लेकर जीवन भर पोषण, सुरक्षा, मार्गदर्शन और भावनात्मक जुड़ाव प्रदान करती है। कार्यक्रम के अंत में श्रीमान प्रदीप भारद्वाज जी (प्रदेश मंत्री प. उ. प्र. विद्या भारती) ने मातृशक्ति, अतिथिगण व समस्त स्टाफ का आभार व्यक्त किया।

हरतालिका तीज

दिनांक- 26/8/2025 दिन- मंगलवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में प्रोजेक्टर के माध्यम से भैया/बहिनों को हरतालिका तीज कार्यक्रम के विषय में बताया गया व आचार्या बहिन श्रीमती शीला सिंह जी ने पौराणिक कथा के द्वारा इस दिन की विशेषता का वर्णन किया। विद्या भारती द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थानों में विभिन्न त्योहारों के माध्यम से छात्रों को भारतीय संस्कृति, परंपराओं और धार्मिक मूल्यों से परिचित कराया जाता है। इसी क्रम में है हरतालिका तीज। यह पर्व मनाने से छात्रों को हिन्दू धर्म की पौराणिक कथाओं और धार्मिक अनुष्ठानों के बारे में जानने का अवसर मिलता है।

गणेश चतुर्थी

सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा में दिनांक- 26/8/2025 दिन बुधवार को गणेश चतुर्थी उत्सव मनाया गया। गणेश चतुर्थी मनाने का मुख्य उद्देश्य बुद्धि और सिद्धि के देवता भगवान गणेश के जन्मोत्सव का जश्न मनाना जाता है, जो सभी बाधाओं को दूर करने वाले और समृद्धि लाने वाले माने जाते हैं।

राष्ट्रीय खेल दिवस

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

NOTE 13 5G | SWATI

दिनांक- 29/08/2025 दिन शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा में खेल दिवस मनाया गया। खेल दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य हैं महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के योगदान को सम्मानित करना, देश में खेल गतिविधियों को बढ़ावा देना, स्वस्थ और सक्रिय जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करना,यह दिन शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देने का भी अवसर प्रदान करता है।

इस दिन सभी भैया-बहिनों ने विभिन्न प्रकार के खेलों में प्रतिभागिता की। खेल दिवस पर भाग लेने से भैया बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर बनाने, आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल, टीम वर्क और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में मदद मिली।

जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम

दिनांक- 29/08/2025 दिन शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में कक्षा अरुण से पंचम तक के अगस्त माह में जन्मे भैया/बहिनों की दीर्घायु के लिए जन्मोत्सव पर हवन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें अग्निहोत्र करते यजमान और साथ ही अन्य अभिभावक बंधु भी उपस्थित रहे। विद्यालय में जन्मोत्सव हवन का मुख्य उद्देश्य छात्रों में समर्पण, संस्कार और देशभक्ति की भावना को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम छात्रों को भारतीय संस्कृति, मूल्यों और परंपराओं से परिचित कराता है, और उन्हें राष्ट्र के प्रति समर्पित नागरिक बनाने में मदद करता है। हवन के माध्यम से छात्रों में भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा दिया जाता है।

बताओ तो जानें

नीचे दिए गए शब्दों को शब्द खोज में से ढूँढ़िए।
Find the words given below in the word search puzzle.

गुड़िया	कुरता	चाँदनी	कछुआ	धूमधाम
करेला	बेलन	सैनिक	बैलगाड़ी	कबूतर
तैराक	फुलवारी	नासपाती	तरबूज	तितली
नम:	टमाटर	चंपक	दुकान	कृषक

क	वि	डी	बै	क	ट	मा	ट	र	ली
त	बू	न	ष	र	बै	ती	हा	त	आ
र	आ	त	तै	रा	क	ल	ति	ष	भ
बू	ति	न	र	कु	ना	बा	गा	मा	फु
ज	का	ष	नि	र	धू	श	सै	ड़ी	ल
दु	क	छु	आ	ता	ना	म	पा	भ	वा
ब	न	म:	फु	बे	ल	न	धा	ती	री
गु	सै	नि	क	चाँ	कृ	ट	श	म	क
ड़ि	चं	प	क	द	नि	ष	रे	हा	रे
या	ना	ट	चू	नी	जा	बा	क	गा	ला

पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

- अनंत चतुर्दशी कब मनाया जाता है?
- विश्व साक्षरता दिवस कब मनाया जाता है ?
- हिंदी दिवस मनाने के लिए भारत ने सविधान के कौन से अनुच्छेद में प्रावधान किया?
- देवी दुर्गा के नौ रूप के नाम बताये?
- पंडित दीनदयाल के माता पिता का नाम बताये?
- 15 अगस्त 2025 स्वतंत्रता दिवस की कौन सी वर्षगाँठ मनाई गई?
- शिशु का जीवन में प्रथम गुरु कौन होता है?
- गणेश जी की परिवार के नाम लिखे।
- मेजर ध्यानचंद कौन थे?
- विद्यालय में होने वाले जन्मोत्सव हवन का मुख्य उद्देश्य क्या है?

आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अत: इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे।

कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 33 व 34 में दिएप्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 20 जुलाई 2025 तक भेजने होंगे।